प्रश्न : जापान में मेजी पुनर्स्थापन के सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनों की आलोचनात्मक ~~समीक्षा~~ समीक्षा कीजिए।

उत्तर : जापान के इतिहास में मेजी पुनर्स्थापना का विशेष महत्व है। इसने जापान में एक नए युग का शुभारम्भ किया। यद्यपि शोगुन की समाप्ति और मेजी पुनर्स्थापना दोनों घटनाएं अत्यन्त साधारण ढंग से सम्पन्न हुई थीं किन्तु जापानी इतिहास में इसके महत्व को कम नहीं किया जा सकता। जापान के लिए यह एक महानतम घटना सिद्ध हुई। कहा जाता है कि The Meiji - Restoration was like the bursting of a dam behind which had accumulated the energies and forces of centuries. मेजी पुनर्स्थापना के बाद जापानी नेताओं ने यह अनुभव किया कि जापान को दो मोर्चों पर सुदृढ़ होना चाहिए (i) सैनिक शक्ति और (ii) द्रुत आर्थिक विकास। केन्द्रीय सरकार का नियंत्रण प्रत्यक्ष रूप से सम्राट के हाथ में आया तथा प्रशासन का कार्य सत्सुमा, चोशु, टोसा तथा हिजेन आदि वर्गों के नेताओं द्वारा किया जाने लगा जिसने तोकुगावा घराने के विरुद्ध क्रान्ति में भाग लिया था।

मेजी पुनर्स्थापना के बाद जापान में अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए। प्रस्तुत प्रश्न में हमलोगों का सम्बन्ध सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक परिवर्तनों से है। सर्वप्रथम सामाजिक परिवर्तनों के सम्बन्ध में। मेजी पुनर्स्थापना के पूर्व जापान में सामन्ती प्रथा प्रचलित थी। सामन्त वर्ग सम्पूर्ण जापान में फैले हुए थे और अपने-अपने क्षेत्र में वे शासन की सम्पूर्ण व्यवस्था करते थे। 1868 की रक्तहीन क्रान्ति के बाद सबसे प्रमुख प्रश्न यह था कि देश में एक व्यवस्थित और शक्तिशाली सरकार की स्थापना कैसे की जाय और सम्पूर्ण जापान आन्तरिक भेदभाव को भूलकर एक केन्द्रीय शासन के सूत्र में कैसे आबद्ध हो जाय। 1869 में सामन्तशाही प्रथा को समाप्त कर दिया गया और सरदारों ने अपने अधिकार को सरकार के हाथ यह कहकर सुपुर्द कर दिया कि सम्पूर्ण भूमि सम्राट की है। अतः सम्पूर्ण देश में एक समान व्यवस्था कायम करने के लिए हमलोग अपने सम्पूर्ण अधिकारों को लौटा देते हैं। अब सभी रियासतें सम्राट के अधीन हो गयीं। किन्तु जागीरों पर से सामन्तों के शासन की समाप्ति नहीं हुई। रियासतों को जिला का रूप दिया गया और इनमें उन्हें दैम्यों को ही प्रशासन

Scanned with CamScanner

नियुक्त किया गया और साथ ही साथ केन्द्रीय सरकार का ऊनपर कड़ा नियंत्रण कर दिया गया। जनता इस बात का अनुभव करने लगी कि सम्राट का उसपर प्रत्यक्ष शासन है।

किन्तु, 29 अगस्त 1871 को सरकार ने रियासतों को पूरीतरह समाप्त करने का निर्णय लिया गया। अब रियासतों की जगह को तीन शहरी प्रदेशों - ओसाका, क्योतो और टोकियो - में विभाजित कर केन्द्रीय शासन द्वारा नियुक्त गवर्नरों के अधीन कर दिया गया। इसप्रकार प्राचीन सामन्तशाही व्यवस्था से सम्बद्ध प्रशासनिक व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया। आन्तरिक व्यापार सम्बन्धी प्रतिबन्धों को समाप्त कर दिया गया। समस्त नागरिकों को विधि के दृष्टिकोण से समान घोषित किया गया। जिसके पास सम्पति हो उसे जमीन खरीदने और सम्पति रखने की अनुमा दे दी गयी। जनता को सामान्य एवं प्राविधिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विद्यालय और महाविद्यालय खोले गए। इसके फलस्वरूप जापान में कार्यकुशल और प्रशिक्षित ~~कार्यकुश~~ कार्यकर्ता उपलब्ध हुए। शिक्षा अनिवार्य बना दी गयी जिसके कारण जापान में शिक्षित व्यक्तियों का अनुपात अधिक होगया। 19वीं शताब्दी के अन्त तक जापान तकनीकी व्यक्तियों के लिए आत्मनिर्भर होगया।

मेजी-पुनर्स्थापना के बाद जापान में राजनैतिक क्षेत्रों में भी महान परिवर्तन हुए। यहां यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि अपनी मेजी पुनर्स्थापना के नींव पर जापानी सरकार का कौन सा ढांचा और दर्शन उपस्थित होगा। सामाजिक परिवर्तनों ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था कि नवीन शासन राष्ट्रवादी और विशिष्ट जापानी अर्थों में केन्द्रीभूत होगा। प्रश्न यह भी था कि क्या शासन लोकप्रिय ~~आधार~~ संविधान, जनाधिकार पत्र, व्यापक मताधिकार, राजनैतिक दल और पश्चिम के लोकतांत्रिक देशों के प्रभावशाली औद्योगिक और मध्यम वर्गों की धारणा के अनुसार आर्थिक व्यक्तिवाद पर लोकतन्त्र भी होगा। 1868 में सम्राट द्वारा यह घोषणा की गयी कि शासन सम्बन्धी नये सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाएगा।

इसी समय जापान में कुछ प्रगतिशील विचारक भी प्रकाश में आए जिन्होंने शासन में सुधार के लिए आन्दोलन चलाया। इसके नेता थे इतागाकी ताईसुके। 1874 में उसने सम्राट से

अनुरोध किया कि 1868 की घोषणा के अनुसार जापान में संसद की स्थापना की जाए जो जापान के लोकमत का वास्तविक प्रतिनिधित्व करे। इस माँग को राष्ट्रीय रूप देने के लिए 1875 में देशभक्तों का समाज नामक एक संगठन का निर्माण किया गया, जिसे बाद में राष्ट्रीय संसद स्थापना दल का नाम दिया गया। सम्राट ने इस आन्दोलन से प्रभावित होकर सुधार करना स्वीकार कर लिया जिसके अनुसार जापान में पहली बार एक सीनेट और एक प्रधान केन्द्रीय न्यायालय की स्थापना की गयी। 1878 में प्रान्तों में पांच येन तथा उससे ज्यादा लगान देने वाले पुरुषों द्वारा चुनी हुई प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा कायम करने का निर्णय किया गया। इनका काम वित्तीय मामलों पर विचार करना था। किन्तु, गवर्नरों को विशेषाधिकार भी था और इस दृष्टिकोण से ये संस्थाएं बेकार थीं।

इसी समय जापान में नये नये राजनैतिक दलों का प्रादुर्भाव भी शुरु हुआ। जापान में ऐसे बहुत से व्यक्ति थे जो इन सुधारों से सन्तुष्ट नहीं थे तथा वे जापान को पूरी तरह एक लोकतान्त्रिक देश बनाना चाहते थे। फलस्वरूप, राजनीतिक गतिविधियों में वृद्धि हुई और प्रतिदिन जुलूस निकलने लगे। 1882 में एक सरकारी अध्यादेश जारी किया गया जिसके द्वारा राजनैतिक दलों को अपने विधान, नियम, सदस्यसूची आदि पुलिस में पंजीकृत कराने पर बाध्य किया गया। किन्तु, इस अध्यादेश का जापानी जनता पर कोई व्यापक प्रभाव नहीं पड़ा। वहां राजनीतिक दलों की गतिविधियों के कारण जनजीवन उत्तरोत्तर अशान्त होता जा रहा था। सरकार को लोकमत पर ध्यान रखते हुए कुछ संवैधानिक सुधार करना अत्यन्त आवश्यक हो गया।

अक्टूबर, 1881 में एक घोषणा प्रकाशित की गयी जिसमें यह वचन दिया गया कि 1890 तक जापान के लिए एक संविधान बन जाएगा और इसके अनुसार एक राष्ट्रीय संसद का गठन किया जाएगा। 11 फरवरी 1889 को नए संविधान की घोषणा की गयी। इसे मेजी संविधान कहते हैं। यह संविधान सामन्तवाद और पूंजीवाद का अनोखा सम्मिश्रण था। विधायिका और मंत्रिपरिषद की व्यवस्था की गयी जिसके कारण संसदीय व्यवस्था का सूत्रपात हुआ। संविधान में नागरिकों को कुछ मौलिक अधिकार प्रदान किए गए। प्रत्येक नागरिक को भाषण देने, सभा करने, लिखने, संस्था बनाने और धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया। संक्षेप में, मेजी संविधान

Scanned with CamScanner

राजा के दैवी अधिकार, सामन्तवाद और पश्चिमी लोकतन्त्र के सिद्धान्तों तथा पुरानी रूढ़ियों और नयी मान्यताओं का अपूर्व सम्मिश्रण था। इसका प्रभाव यह हुआ कि प्रशासकीय नियन्त्रण केन्द्रित होगया और प्रशासनिक कुशलता में वृद्धि हुई।

Meiji-पुनर्स्थापना का सबसे व्यापक प्रभाव आर्थिक क्षेत्र पर पड़ा। कृषि, उद्योग, व्यापार आदि क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन किया। कृषि सुधार के लिए प्रयोगशाला, आदर्श खेती आदि की व्यवस्था की गयी। सामन्ती प्रथा के अन्त होने पर किसानों की स्थिति पहले की अपेक्षा अच्छी होगयी। 1872 में किसानों का अपनी भूमि पर स्वामित्व स्थापित होगया। पहले सामन्त अपनी भूमि जोतने वाले किसानों से उपज का एक निश्चित भाग लगान के रूप में लिया करते थे। किन्तु अब सरकार उपज के स्थान पर सिक्के के रूप में मालगुजारी लेने लगी। इससे किसानों को बहुत लाभ हुआ। फिर भी, धन की कमी और बढ़ते हुए सरकारी व्ययों को पूरा करने में असमर्थ होने के कारण सरकार द्वारा किसानों को कोई विशेष राहत नहीं दिया जासका। किसानों ने मेजी शासन का समर्थन इसलिए किया था कि उन्हें यह उम्मीद थी कि सरकारी भूमि उनमें बंटेगी और करों का भार हल्का होगा। किन्तु व्यवहार में सामन्तों के प्रभाव और आर्थिक कठिनाई के कारण ऐसा नहीं हो सका। 1873 में जमीन की कीमत फसल के मूल्य के औसत से 16 गुने के हिसाब से निश्चित की गयी। इस जमीन की कीमत का तीन प्रतिशत लगान निश्चित किया गया। इस नकद लगान से, कीमतों के उतार-चढ़ाव के उन दिनों में किसानों को काफी नुकसान हुआ। फलस्वरूप, विद्रोह शुरू हुआ।

स्थिति में सुधार के लिए सरकार ने दूसरे उपायों को अपनाया। किसानों को हर तरह से राजकीय सहायता प्रदान की गयी, जिनसे कि वे उत्पादकता को बढ़ा सकें। इन्हें वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की विधि बतलाई गयी। किन्तु इससे भी किसान सन्तुष्ट नहीं हुए। अनाज की कीमत बढ़ने से किसानों की कठिनाई और बढ़ गयी और वे लगान देने में अपने आप को असमर्थ पाया। 1883 से 1890 तक किसानों पर लगान वसूल करने के लिए घोर अत्याचार किए गए। इस भयंकर परिस्थिति में किसानों को अपनी जमीन बेच देनी पड़ी जिन्हें सामन्तवादियों और धनी किसानों

ने खरीद लिया। इस प्रकार जापान में एक नए सामन्त वर्ग का जन्म हुआ और किसान अब मजदूर बन गया। वस्तुतः मेजी-पुनर्स्थापना ने जापान की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के उस बुर्जुआ पूंजीवादी ढांचे का निर्माण किया जिसके अन्दर रहकर जापान को भविष्य में आगे बढ़ना था। इसने जापान को आधुनिक पूंजीवाद का स्वर्ग बना दिया।

जापान की सरकार ने सबसे अधिक ध्यान देश के औद्योगिक विकास पर दिया। जापान यह अनुभव करता था कि व्यवसाय के क्षेत्र में वे पाश्चात्य राज्यों की तुलना में बहुत पिछड़े हैं और जबतक पर्याप्त आर्थिक विकास नहीं कर लेते तबतक पश्चिमी देशों का मुकाबला नहीं कर सकेंगे। देशवासियों ने पाश्चात्य व्यावसायिक संगठन अपनाना शुरू किया। नए-नए कारखाने स्थापित किए गए और यूरोप तथा अमेरिका से मशीनों का आयात किया गया। सरकार की ओर से जापान में कल-कारखाने खोलने के लिए लोगों को प्रोत्साहन दिया गया। परिणामस्वरूप कुछ वर्षों के अन्दर ही जापान में औद्योगिक क्रांति की लहर दौड़ गयी और जापान कल-कारखानों का देश हो गया। बड़े पैमाने के उद्योगों में कपड़ा, रेशम, लोहे के सामान आदि का प्रचुर मात्रा में उत्पादन प्रारम्भ हुआ। कुछ ही वर्षों में जापान ने औद्योगिक क्षेत्र में इतनी प्रगति कर ली कि वह यूरोप के किसी भी राज्य का इस क्षेत्र में मुकाबला कर सकता था।

इसके अतिरिक्त 1872 में जापान में सर्वप्रथम रेल-लाइनों का निर्माण शुरू हुआ और 1894 तक देश में रेल की लाइनें बिछ गयीं। C.C. Allen ने अपनी पुस्तक A Short Economic History of Japan में लिखा है कि The state naturally assumed major responsibility for introducing framework for international economic contact. सरकार और गैर-सरकारी पूंजीपतियों के बीच पूर्ण सहयोग एवं संगति थी। इसी कारण जापान में आर्थिक विकास की प्रक्रिया अत्यन्त तीव्र रही है। साथ ही साथ वित्तीय स्थिति को सुधारने के लिए कर प्रणाली को पुनर्गठित एवं पुनर्व्यवस्थित किया गया। पांच-छः वर्षों के अन्दर सरकार ने अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली के आधार पर बैंकों का निर्माण करना प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में जापान ने silver standard को अपनाया था किन्तु 1897 में gold standard

को अपना लिया गया। आवागमन और व्यापार पर लगे अधिकांश प्रतिबन्धों को समाप्त कर दिया गया और किसी को भी व्यापार में प्रवेश की छूट दी गयी। सरकार भी विदेशी व्यापार में विशेष रूप से अभिरुचि प्रदर्शित करती थी। इसका कारण यह था कि आर्थिक विकास के लिए तथा व्यापक औद्योगीकरण के लिए अधिकांश मशीनों एवं यन्त्रों का आयात करना पड़ता था तथा इसके लिए विदेशी मुद्रा भुगतान की आवश्यकता थी। अतः विदेशी भुगतान के लिए आवश्यक मुद्रा प्राप्त करने के उद्देश्य से सरकार ने निर्यात को प्रोत्साहित करना प्रारम्भ किया। इसके विपरीत विदेशों से आयात को अनुत्साहित करने के लिए उसके द्वारा सीमेंट, ग्लास तथा अन्य प्रकार के कारखानों की स्थापना की गयी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मेजी-पुनर्स्थापना के ~~...~~ फलस्वरूप जापान की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन किए गए। सामाजिक समानता स्थापित करने के लिए वहां की तात्कालिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन किए गए। सामन्ती प्रथा का अन्त करके समानता के आधार पर समाज की स्थापना करने का प्रयत्न किया गया। किन्तु, इन परिवर्तनों के बावजूद भी, यद्यपि सामन्तवादी प्रथा का अन्त हुआ, फिर भी जो व्यवस्था की गयी उसने गरीबी और अमीरी के भेद को नहीं मिटाया जा सका। इस नई व्यवस्था के अन्तर्गत एक दूसरे तरह का सामन्तवाद विकसित हुआ जो पूंजीपति के रूप में परिवर्तित हो गया। गरीब किसान इन पूंजीपतियों के कठपुतली बन गए थे।

जहां तक राजनीतिक परिवर्तनों का सम्बन्ध है यद्यपि इस क्षेत्र में भी व्यापक फेर बदल कर दिए गए ~~किन्तु~~ संविधान का निर्माण किया गया, दो सदनात्मक शासन व्यवस्था कायम की गयी, नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदान किए गए इत्यादि किन्तु प्रश्न यह उठता है कि मताधिकार किसे मिला, सामन्तों का स्थान क्या रहा, जनसाधारण के प्रतिनिधियों को क्या अधिकार प्राप्त हुआ, देश की राजनीतिक व्यवस्था पर किस वर्ग का प्रभाव स्थापित हुआ तथा जापान में किन लोगों को सम्पत्ति दी गयी थी। यदि इन प्रश्नों को जापान के इतिहास ~~के ...~~ के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए तो इसका कोई सर्वसम्मत जवाब प्राप्त नहीं होता। इसका कारण यह है कि सामंतवाद ~~का नाम परिवर्तित होकर~~ का स्थान अब पूंजीवाद ने ले लिया। जनसाधारण

के प्रतिनिधियों को नजरअंदाज किया गया और शासन पर एक विशेष वर्ग का आधिपत्य स्थापित होगया।

किन्तु, इन त्रुटियों के होते हुए भी हम मेजी-पुनर्स्थापना के फलस्वरूप किए गए परिवर्तनों की आलोचना नहीं कर सकते क्योंकि यह जापान के इतिहास मे एक महान घटना सिद्ध हुआ। इसने सदियों से जापानी एकान्तवाद को समाप्त कर पश्चिमी प्रभावों के लिए उसके द्वार सदा के लिए खोल दिया। साथ ही साथ जापान का वह सामन्तवादी ढांचा भी समाप्त होगया जिसे 18 वी तथा 19वी शताब्दियों मे तोकुगावा घराने ने बनाए रखा था। व्यावसायिक उन्नति और सैनिक शक्ति की दृष्टि से अब जापान पश्चिमी देशों के समकक्ष होगया

Scanned with CamScanner

Magadh University, Bodh Gaya

Format for Online Teaching in University and Colleges

Name of Department / College : Economics / S. Sinha College, Aurangabad

Date	Department/ Subject	Timing	Class	Teacher's Name	Topic Taught	Content of Topic	Remarks
04.05.2020	Economics	10-00 Am to 10.50 Am	B.A. Hons. Part III	Pranav Kumar Singh	Meiji Restoration in Japan		
05.05.2020	Economics	10.00 Am to 10.50 Am	B.A. Hons. Part III	Pranav Kumar Singh	Meiji Restoration in Japan		
06.05.2020	Economics	10-00Am to 10.50 Am	M.A. IST Sem.	Pranav Kumar Singh	Liquidity Preference Theory of Interest		
08.05.2020	Economics	10.00 Am to 10.50 Am.	M.A. IST Sem.	Pranav Kumar Singh	Liquidity Preference Theory of Interest		
09.05.2020	Economics	10.00 Am to 10.50 Am	B.A. Hons Part III	Pranav Kumar Singh	Combination Movement in the U.S.A.		

Scanned with CamScanner